



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्मान पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दीर्घभूम	२३-७-२३	१	१-७

ज्वार की नई उत्पादन तकनीकों से पशुपालकों और किसानों को होगा लाभ : कुलपति

हकूमि के चारा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र का अवार्ड

हरियाणा व्यूज़ || डिसाइन

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय सम्मान अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53वीं वार्षिक सम्मह बैठक में उपरोक्त परिषद के सहायक महानिदेशक (खाड़ी एवं चारा फसल) डॉ. एसके प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया।



हिसार। हकूमि के चारा अनुभाग की टीम द्वारा दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड मिलने पर बधाई देते कुलपति प्रो. वीआर कापोज।

उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किसियों के विकास, ज्वार में फसलकोरस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बर्सीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समग्र सिकारियों अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीच

विश्वविद्यालय के अनुसंधान विदेशीक डॉ. जित राम शर्मा वे ज्वार की बड़ी किसियों का विशेषज्ञों का उत्तम करते हुए बताया जाता है। ज्वार की विकास की सीखकों 53 लक्ष रुपये कराई वाली किसियों में फ्रैंटलोन की ओर उत्पादन की गई है। ज्वार की विकास की सीखकों 483 लिटरल प्रति हेक्टेएर है। यह शूट पार्क, रसन थोरे जैसी कीटों के प्रति प्रतिरोधी है तथा गो-टी-एच स्ट्राईट व शूटी स्ट्राईप बीमारी के प्रति प्रतिरोधी है। इस किसियों को चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों द्वारा एक विशेषज्ञ विकास किया गया है।

एचजे एच 1513 व एचजे 1514 हरियाणा में बिजार्ड के लिए विनियोग

कृषि विश्वविद्यालय के अधिकारी डॉ. एसके पाठुजा ने यताच उत्पादन पर एचजे 1513 व एचजे 1514 हरियाणा राज्य ने विनियोग के लिए विनियोग की जाई है। इनमें से एचजे 1513 एक कटाई वाली हाईविल किसियों है और इनकी दूरी चारों की ओरका दैवालय 7.17 लिटरल प्रति हेक्टेएर है। यह गोठी व चुइ़ी के लिए एक विनियोग है जिसका 8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पार्कलोना व शूट पार्किंग व स्टेन थोरे जैसी कीटों के प्रति सटनशील है। इस किसियों वाली विनियोग करने का श्रेय दो वी. पी. ट्रान्सफर, डी.एस.पी.एन.टी.एस. और एस.एस.एस. द्वारा दिया गया है।

पाल सिंह, मजलियां द्वितीय व सरिता देवी को जाता है। इन्होंने एचजे 1514 प्रति हेक्टेएर वाली किसियों की ओरका दैवालय 6.6 व चुइ़ी वाली की पेट्रोल 16.1 लिटरल प्रति हेक्टेएर है। यह गोठी व चुइ़ी विनियोग के प्रति प्रतिरोधी व शूट कटाई व स्टेन थोरे जैसी कीटों के प्रति सटनशील है। इस किसियों वाली विनियोग करने वाले वैज्ञानिकों ने डॉ. पी. कुलारी, डॉ.एस. फालांत, एस.आर्य, एस.के.पाठुजा, जीरज बरोड, लक्ष्मण लाल शर्मा, द्वारिंद्र द्वारा दिया गया है।

विनियोग कुनौर व गरिमा देवी शामिल हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
१५ जून २०२०	२३-७-२३	२	३-७

हकूमि के चारा अनुभाग को सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र का अवार्ड

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्व श्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र अवार्ड प्रदान किया है। भारतीय श्रीअनु अनुसंधान संस्थान, हैदरबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की वर्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद के सहायक महानिदेशक डा. एसके प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया।

विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फसलेनाम व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-



हकूमि के चारा अनुभाग की टीम को अवार्ड मिलने पर बधाई देते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज। • विज्ञापि

ज्वार की नई किस्मों की ये हैं विशेषताएं, यह पशुओं के लिए बहुत उत्तम

अनुसंधान निदेशक डा. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। ज्वार की सीएसवी 53 एफ एक कटाई वाली किस्म है जिसको देश के ज्वार उगाने वाले सभी राज्यों के लिए अनुमोदित किया गया है।

चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समग्र सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में सराहनीय कार्य किए गये हैं, जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड मिला है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजे-एच-1513 व

एचजे-1514 हाल ही में विकसित की किस्में हैं। इस उपलब्धि के लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने वैज्ञानिकों को बधाई दी है।

8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनशीलता

कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डा. एसके पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजे-एच 1513 व एचजे-एच 1514 किस्में हरियाणा राज्य में बिजाई के लिए विहित की गई है। इनमें से एचजे-एच 1513 एक कटाई वाली हाइब्रिड किस्म है और इसकी हरे चारे की ओसत पैदावार 717 विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह मीठी व जूँसी किस्म है जिसमें 8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनशीलता है। यह पती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट प्लाई व स्टेम बोरर कीड़ों के प्रति सहनशील है। इसी प्रकार एचजे-एच 1514 एक कटाई वाली किस्म है जिसकी हरे चारे की पैदावार 664 व सूखे चारे की पैदावार 161 विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह अधिक प्रोटीन वाली किस्म है। यह पती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट प्लाई व स्टेम बोरर कीड़ों के प्रति सहनशील है। इस किस्म को विकसित करने का श्रेय डा. पी कुमारी, डीएस फोगाट, सत्यवान आर्य, एसके पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, मनजीत सिंह व सरिता देवी को जाता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम पुजाइ के सरो	दिनांक २३-७-२३	पृष्ठ संख्या ५	कॉलम १-२
------------------------------------	-------------------	-------------------	-------------



हक्की के चारा अनुभाग की टीम को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड मिलने पर बधाई देते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

हक्की के चारा अनुभाग को दूसरी बार निला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

हिसार, 22 जुलाई (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान

किया गया है। **» ज्वार की नई उत्पादन के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए लाभ : कुलपति बताया कि**

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्रीअब्र अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53 वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद् के सहायक महानिदेशक (खाड़ी एवं चारा फसल) डॉ. एस.के. प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया।

कुलपति ने बताया कि

विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार को उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की

समग्र सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस

अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सी.एस.वी.-53 एफ किस्म, एच.जे.एच.-1513 व एच.जे.-1514 हाल ही में विकसित की गई किस्में हैं। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होंगी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अभूतजाला	23-7-23	३	१-४

बैठक

इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में की हैं विकसित, राष्ट्रीय स्तर पर मिला है सम्मान

चारा अनुभाग को मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र का अवॉर्ड



हक्किय के चारा अनुभाग की टीम को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र का अवॉर्ड मिलने पर बधाई देते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज। संवाद

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र अवॉर्ड प्रदान किया गया है।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान हैं दराबाद की ओर से आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना

(ज्वार) की 53वीं वार्षिक समूह बैठक में यह अवॉर्ड प्रदान किया गया।

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फासफोरस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन में बेहतरीन कार्य किया है। इसके साथ ही ज्वार-बरसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समग्र सिफारिशें अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में

ज्वार की किस्म : सौएसवी 53 एफ
औसत पैदावार : 483 किवंटल प्रति हेक्टेयर

विशेषता : शूट फ्लाई, स्टेम बोर, ग्रे-लीफ स्पॉट व शूटी स्ट्रिप प्रतिरोधी

विकसित करने वाली टीम : डॉ. पम्मी कुमारी, एसके पाहुजा, डीएस फोगाट, सतपाल, एन खरोड़, बीएल शर्मा एवं मनजीत सिंह।

किस्म : एचजे-एच 1513, एचजे 1514
पैदावार : 717 किवंटल प्रति हेक्टेयर
विशेषता : मीठी व जूसी किस्म, 8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनशीलता, पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फ्लाई व

बहुत सराहनीय कार्य किए हैं, जिनके दृष्टिगत ये अवॉर्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सौएसवी-53 एफ किस्म, एचजे-एच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में

स्टेम बोर कीड़ों के प्रति सहनशील टीम : डॉ. पी. कुमारी, डीएस फोगाट, सतपाल आर्य, एसके पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, मनजीत सिंह व सरिता देवी।

किस्म : एचजे 1514- 664

पैदावार : किवंटल प्रति हेक्टेयर

विशेषता : अधिक प्रोटीन, पत्ती रोग प्रतिरोधी व शूट फ्लाई - स्टेम बोर के प्रति सहनशील

टीम : डॉ. पी. कुमारी, डीएस फोगाट, एस. आर्य, एसके पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, विनोद कुमार व सरिता देवी।

विकसित की गई किस्में हैं। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
२३-७-२३ २३-७-२३	२३-७-२३	३	३-६

अन्वेषण • ज्वार की एचजेएच 1513 व एचजे 1514 किस्में प्रदेश में बिजाई के लिए चिह्नित की

हकूमित के चारा अनुभाग को राष्ट्रीय स्तर पर फिर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र का अवॉर्ड

भारतजन्मूज़। हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र का अवॉर्ड मिला है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्री अब अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय सम्मानित अनुसंधान परियोजना ज्वार की 53वीं वार्षिक सम्मूह बैठक में उपरोक्त परिषद के सहायक महानिदेशक खाद्य एवं चारा फसल डॉ. एस्के. प्रधान ने यह अवॉर्ड प्रदान किया।

कुलपति ने बताया विवि के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फास्फोरस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समग्र सिकारिशों अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवॉर्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एफ किस्म, एचजे-एच-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई किस्में हैं।



दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र का अवॉर्ड मिलने पर बधाई देते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

हाईब्रिड हरे चारे की औसत पैदावार 717 किंवंटल प्रति हेक्टेयर

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस्के. पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजे-एच 1513 व एचजे 1514 किस्में हरियाणा राज्य में बिजाई के लिए चिह्नित की गई हैं। इनमें से एचजे-एच 1513 एक कटाई वाली हाईब्रिड किस्म है और इसकी हरे चारे की औसत पैदावार 717 किंवंटल प्रति हेक्टेयर है। यह मीठी व जूसी किस्म है जिसमें 8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनशीलता है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फ्लाई व स्टेम बोर कीड़ों के प्रति सहनशील है। इस किस्म का विकसित करने का श्रेय डा. पी. कुमारी, डी.एस. फोगाट, सत्यवान आर्य, एस्के. पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, मनजीत सिंह व सरिता देवी को जाता है। इसी प्रकार एचजे 1514 एक कटाई वाली किस्म है जिसकी हरे चारे की पैदावार 664 व सूखे चारे की पैदावार 161 किंवंटल प्रति हेक्टेयर है। यह अधिक प्रोटीन वाली किस्म है। यह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फ्लाई व स्टेम बोर कीड़ों के प्रति सहनशील है। इस किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों में डॉ. पी. कुमारी, डी.एस. फोगाट, एस. आर्य, एस.के. पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, विनोद कुमार व सरिता देवी शामिल हैं।

ज्वार की नई किस्मों की यह है विशेषताएं

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डा. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने बताया ज्वार की सीएसवी 53 एफ एक कटाई वाली किस्म है जिसको देश के ज्वार उगाने वाले सभी राज्यों के लिए अनुमोदित किया गया है। इस किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 483 किंवंटल प्रति हेक्टेयर है। यह शूट फ्लाई, स्टेम बोर जैसे कीड़ों के प्रति प्रतिरोधी है व ग्रे-लीफ स्पॉट व शूटी स्ट्रॉप बीमारी के प्रति प्रतिरोधी है। इस किस्म को चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डा. पम्मी कुमारी, एक पाहुजा, डी.एस. फोगाट, सतपाल, एन. खरोड़, बीएल शर्मा एवं मनजीत सिंह की टीम ने विकसित किया गया है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय .

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उआत समाचार	२३-७-२३	५	३-६

हक्कि के चारा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड ज्वार की नई उत्पादन तकनीकों से पशुपालकों और किसानों को होगा लाभ: कुलपति प्रो. काम्बोज

हिसार, 22 जुलाई (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद् के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल) डॉ. एस.के. प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया। कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही में विकसित की गई किस्में हैं। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होंगी।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता

फोगाट, सतपाल, एन. खरोड़, बी.एल. शर्मा एवं मनजीत सिंह की टीम ने विकसित किया है। कृषि महाविद्यालय के अध्यापिता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजे.एच 1513 व एचजे 1514 किस्में हरियाणा राज्य में बिजाई के लिए विनिति की गई हैं। इनमें से एचजे.एच 1513 एक कटाई वाली हाइब्रिड किस्म है और इसकी हो चरे की औसत पैदावार 717 किंटल प्रति हेक्टेएर है। वह यीठी व जूसी किस्म है जिसमें 8.6 प्रतिशत प्रोटीन व 53 प्रतिशत पाचनशीलता है। वह पत्ती रोगों के प्रति प्रतिरोधी व शूट फ्लाई व स्टेम बोर कीड़ों के प्रति सहनशील है। इस किस्म को विकसित करने का ग्रेड डॉ. पी. कुमारी, डॉ.एस. फोगाट, सत्यवान आर्य, एस.के. पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरो

लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, मनजीत सिंह व सरिता देवी को जाता है। इसी प्रकार एचजे 1514 एक कटाई वाली किस्म है जिसकी हो चरे की पैदावार 664 व सूखे चारे की पैदावार 161 किंटल प्रति हेक्टेएर है। वह अधिक प्रोटीन वाली किस्म है। यह शूट फ्लाई, स्टेम बोर जैसे कीड़ों के प्रति प्रतिरोधी है व ग्रे-लीफ स्पॉट व शूट स्ट्रिप बीमारी के प्रति प्रतिरोधी है। इस किस्म को चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पी. कुमारी, डॉ.एस. फोगाट, एस. आर्य, एस.के. पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरोंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, विनोद कुमार व सरिता देवी शामिल हैं।



हक्कि के चारा अनुभाग की टीम को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड मिलने पर बधाई देते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज। अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत जल्म हैं। उन्होंने बताया ज्वार की सीएसवी 53 एफ एक कटाई वाली किस्म है जिसको देश के ज्वार आने वाले सभी राज्यों के लिए अनुमोदित किया गया है। इस किस्म की हो चरे की औसत पैदावार 483 किंटल प्रति हेक्टेएर है। यह शूट फ्लाई, स्टेम बोर जैसे कीड़ों के प्रति प्रतिरोधी है। इस किस्म को चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पी. कुमारी, डॉ.एस. फोगाट, एस. आर्य, एस.के. पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरोंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, विनोद कुमार व सरिता देवी शामिल हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाप्त्वार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
यूनाईटेड फैसल	२३-७-२३	: १०	३-५

हृषि को दूसरी बार मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र अवॉर्ड

हिसार, 22 जुलाई (हप्ता)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को, ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवॉर्ड प्रदान किया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नथी दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53वीं वार्षिक समूह बैठक में उपरोक्त परिषद के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल) डॉ. एस.के. प्रधान ने यह अवॉर्ड प्रदान किया।

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के वर्षों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फार्मोरेस व पोटाश जैसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्वार-बरसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्वार की समग्र सिफारिशों अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवॉर्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसबी-53 एफ किस्म, एचजे-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई किस्में हैं। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	21.07.2023	--	--

हकूमि के चारा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवॉर्ड

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लकड़ावर दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। कुलपति प्रौ. डॉ. आर. काम्पोज ने यह जनकारी देते हुए कहा कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्रीअब अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद, द्वारा आयोजित अधिकारी भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 5.3 अर्थे व्यापक समूह बैठक में उत्तरोक्त परिषद के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं चारा फसल) डॉ. एस.के. प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया।

विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हल्के ही के बहुंों में ज्वार की उन्नत किस्मों के विकास, ज्वार में फसलों के प्रोट्रो



सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवॉर्ड मिलने पर बड़ी देखभाल।

तर्हीं के प्रबंधन, ज्वार-चारसीम फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक किसिल करने, बहुवर्षीय ज्वार की समूह सिस्कारियों अनुमोदित करने के साथ ज्वार के बीज उत्पादन में बहुत सहाहनीय कार्य किए हैं जिनके पूरिंगत ये अवार्ड दिया गया है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम उर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उत्स्वेच्छ करते हुए कहा कि इन तीनों किस्मों में प्रेरित वर्ष मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पक्षुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने कहा कि इन तीनों किस्मों में प्रेरित वर्ष मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पक्षुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। उन्होंने कहा कि इन तीनों किस्मों में प्रेरित वर्ष मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पक्षुओं के लिए बहुत उत्तम हैं।

की सीएसवी 53 एक एक कटाई यांत्री किस्म है और इसकी हो चारे की औसत पैदावार 717 किंटल प्रति हेक्टेएर है। इस किस्म को किसिल करने का ब्रेय डॉ. पी. कुमारी, डॉ.एस. फोगाट, सत्यवान आर्य, एस.के. पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलीविंदर पाल सिंह, मनजीत सिंह व सरिता देवी को जाता है।

इसी प्रकार एवजे 1514 एक कटाई यांत्री किस्म है जिसकी हो चारे की पैदावार 664 व सूखे चारे की पैदावार 161 किंटल प्रति हेक्टेएर है। इस किस्म को किसिल करने वाले वैज्ञानिकों में डॉ. पी. कुमारी, डॉ.एस. फोगाट, एस. आर्य, एस.के. पाहुजा, सतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलीविंदर पाल सिंह, विनेद कुमार व सरिता देवी शामिल हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपक् कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	फॉलम
हैलो हिसार	22.07.2023	--	--

हकूमति के बारा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

ज्यादा की जई उत्पादन तकनीकों से पशुपालकों और किसानों को होगा लाभः कुलपति प्रो. चौ.आर. काम्होज

अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. चौ.आर. काम्होज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद,

नई दिल्ली के ओरांगांठ भारतीय कौशल अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना (ज्यादा) की 53वीं वार्षिक सम्मुहू बैठक में उपरोक्त परिषद के सहायक महानिदेशक (खाद्य एवं ज्यादा फसल) डॉ. एस.के. प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया।

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के बारा अनुभाग में हाल ही के बीच में ज्यादा की उन्नत किसियों के विकास, ज्यादा में फार्मटोपस व पोटाश ऐसे पोषक तत्वों के प्रबंधन, ज्यादा-वर्गीय फसल-चक्र की उत्पादन तकनीक विकसित करने, बहुवर्षीय ज्यादा



की समय सिफारिशों अनुसारित करने के साथ ज्यादा के बीच उत्पादन में बहुत सराहनीय कार्य किए हैं जिनके दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्यादा की 13 उन्नत किसियों विकसित की है। इनमें से सीएसबी-53 एक किस्म, एक्जेंच-1513 व एक्जेंच-1514 हाल ही में विकसित की गई किसियों हैं। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किसीमें किसीनो व पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होंगी। ज्यादा की नई किसियों की यह ही विशेषताएँ; विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने ज्यादा की नई किसियों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किसियों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण वे पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कल्पि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिन्दुस्थान समाचार	22.07.2023	--	--

हिन्दुस्थान समाचार



हिसार: एचएयू के चारा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर
पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

17व - 1 shares



हिसार, 22 जुलाई (हि स.)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग की
जबर चालान पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए तगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर
वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है।
विश्वविद्यालय के कुलकर्णी द्वारा श्री अनंत चालानोज ने चालान के भारतीय कृषि
अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अध्यक्ष भारतीय श्री अनंत अनुसंधान संस्थान,
हैदराबाद द्वारा आयोडिल अडिल भारतीय समिति अनुसंधान परियोजना (ज्यार)
जी 53वीं उद्योग सम्मुख बैठक में उपरोक्त परिषद के सदापत्र महानिदेशक
(ज्यार एवं चारा चालान) डॉ. एसके प्रधान ने यह अवार्ड प्रदान किया।

- कुलकर्णी ने यानिकार की चालान के विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने हाल ही के
तीनों में जबर चारा उत्तम विकास के लिए ज्यार में प्राप्तीरक व योटार उन्मे
योग्यता के बाबेन, ज्यार-बरसीम चालान-छाल की उत्पादन तकनीक
विकासित करने, बहुवर्षीय जबर की समय सिकारियों अनुप्रयोगित करने के साथ
जबर के दीज उत्पादन में बहुत सुलझाई जार्द लिए हैं, जिनके हालिनत यह
अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक जबर की 13 उत्तम विकास विकासित
की है। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के विज्ञानियों को बधाई दी और
उन्होंने यह विज्ञानी विज्ञानी व प्रशोधकों के लिए बहुत उत्सुक उपरोक्त संकेत होनी।
- हिन्दुस्थान समाचारपत्रेषुमनुसारी



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नम छोर	22.07.2023	--	--

चारा अनुभाग को राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

नम-छोर नमूना नं. २२ नमूना

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग के नेतृत्व पर नमूना अनुसंधान के लिए लक्षण दूषित चारा राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र भवारी इलाज लिया गया है। विश्वविद्यालय के मुख्यालयी दी. वी.आर. चारापोइज ने बताया कि चारापोइज विश्वविद्यालय के अंतर्गत चारापोइज विश्वविद्यालय अनुसंधान संकाय, हैदराबाद द्वारा आयोजित अधिकृत चारापोइज अनुसंधान वीडियोज (नमा) की ५३वीं वार्षिक नमूना फैज़ाल में उपलब्ध विश्वविद्यालय के चारापोइज विश्वविद्यालय (चारा पोइज) द्वा. एस.के. प्रधान ने इस अवार्ड प्रदान किया। मुख्यालय ने बताया कि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने इसली दी के बीच नमा वी.आर. चारापोइज के विवरण, जल में वायरोंग्रास व पोटाश और पोटाश नमूनों के प्रबोधन, नमा-चारापोइज फैज़ाल-चारा की उत्पादन उत्पादन का विवरित करने, चारापोइज नमा की समस्या विश्वविद्यालय अनुसंधान करने के साथ जहार के लोक उत्पादन में बहुत लगावीन वायर लिया है जिसके लियाहा वे अवार्ड दिया जाता है। इस अनुभाग के अध्यक्ष नमा की 13 दूषित लियाने विश्वविद्यालय की है। इसमें से लोकों-३३ पास लिया, परन्तु-



1513 व १५१४ नमूने में विवरित की गई लियाने हैं। इसमें इस उत्तरीय के लिए, अनुभाग के वीडियोजों को बताया दी गई कठा लिंग वे विवरित लियाने व नमूनालायी के लिए चारा पोइज लक्षण दूषित लियाने हैं। अनुसंधान विभाग द्वा. ओर एक नमा ने जल की यह लियानों की विश्वविद्यालय का उत्पादन करते हुए बताया कि इन लीनों लियाने में पोटाश की मात्रा व पायरोंग्रास अधिक होने के बावजूद ये पास्युओं के लिए चारा उत्तम है। उत्तमी बताया नमा की सीमाओं ५.३ लाख एक बट्टी वाली लिया है जिसको देने के लिए उत्तमी लोकों नमूनों के लिए अनुसंधान लिया जाता है। इस लियान की हो जाती ही और जीवाल ऐलाना। ४४३ लियान जीते होते हैं। इस लियान की चारा अनुभाग के वीडियोजों द्वा. एस.

कुमारी, एस.के. प्रधान, दीपक चोपड़ा, सरवाल, एवं राहीद, लोकल जनों द्वा. बताया लिया की दीप ने विवरित किया है।

कृषि विश्वविद्यालय के अधिकारी द्वा. एस.के. प्रधान ने बताया जबकि एकलेख १५१३ व १५१४ लियाने हरियाणा राज्य में विवरित के लिए विवरित की गई है। इसमें से एकलेख १५१३ व १५१४ कार्यालय वाली हालात लिया है और इसमें हरे जो वी.आर. फैज़ाल ७१७ लियान जीते होते हैं। वह लीनों व जुमी लिया है जिसमें ३.६ लाइन लोटीन व ५.३ लोटीन पायरोंग्रास है। इसी जमा एकलेख १५१४ एक बट्टी वाली लिया है जिसमें हो जाती ही जाते ही पैदावार ६६५ व सुखे जो वी.आर. फैज़ाल १६१ लियान जीते होते हैं। वह अधिक लोटीन वाली लिया है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपक् कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे	22.07.2023	--	--

हक्कि के चारा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

卷之三

प्रायः विद्युति विद्युतिकार्यम्
विद्युति विद्युतिम् विद्युति विद्युति



जल-वायन वायन-जल की अस्तित्व-स्थिति विवेदित करते, वायन-जल स्थिति वायन विवेदित अस्तित्व करने के बावजूद जल के लिए वायन में जल वायन-विवेदित करते हैं। इसका उल्लेख ने अस्ति विवेदित करते हैं। इसका उल्लेख ने अस्ति विवेदित करते हैं।

ਅੰਗਰੇ ਦੀ ਪੈਸ਼ੇਵਰੀ ਦੀ ਕਥਾ ਲੀ ਔਪਨਾ ਹਿੱਤ ਦੇ ਵਿਚਾਰੇ ਵਿਚਾਰੀ ਦ ਪਾਸੁਕਾਂ ਦੀ ਦੇਖਾਂ ਜਾਣ ਸਾਡੇ ਹੋਏ ਰਹ੍ਯੇ।

जबकि वह अपने दोस्रे बालों का नियन्त्रण करता है। इसका अभ्यास विकास की ओर जाता है औ उसके लिए वह अपने दोस्रे बालों की विभिन्नता का अध्ययन करता है। इसका अभ्यास विकास की ओर जाता है औ उसके लिए वह अपने दोस्रे बालों की विभिन्नता का अध्ययन करता है।

कृष्ण न विद्युतान्त्रिका की
जूँगी अपरिहार्य के लिए उसका
प्रयोग वैदिक वाचा की व्याख्यान
15-13 व 15-14 विषयी विवेचन
करने से विद्युत के लिए उपरिकृत तो यह है।
उन्हें वैदिक व्याख्यान 15-13 का वाचन करने
के बाद उपरिकृत तो यह है।
विद्युत विद्युत की विद्युत है।

यह लौटी वायु की विवरण है जिसमें १०-५
प्रतिशत अम्बिग्न व ४३ प्रतिशत वायोजनावाही
है। यह लौटी वायु के लिए उत्तीर्णीकृत व सुख
प्रदायक व दैर्घ्य वाली होती है। इसी विवरण
के अनुसार वायोजनावाही का एक विवरण
है। यह अम्बिग्न, अंगूष्ठा, अंगूष्ठा-
वायोजना, अंगूष्ठा-वायोजना, विषय वायोजना,
वायोजना वायोजना, वायोजनावायोजना वायोजना
वायोजना वायोजना वायोजना वायोजना वायोजना।

करने वाला था। यह अपनी जीवन की अधिकांश वर्षों में इसकी विभिन्न विधियों का अध्ययन करता रहा। उसकी विद्या का अध्ययन विभिन्न विधियों का अध्ययन करता रहा। उसकी विद्या का अध्ययन विभिन्न विधियों का अध्ययन करता रहा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	21.07.2023	--	--

हकूमि के चारा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड

ज्वार की नई उत्पादन तकनीकों से पशुपालकों और किसानों को होगा लाभ: कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

पाठक पक्ष न्यूज़

हिसार, 22 जूनाई : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग को ज्वार फसल पर उत्कृष्ट अनुसंधानों के लिए लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2022-23 का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र अवार्ड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत भारतीय श्रीअम्र अनुसंधान संस्थान, हैदरबाद द्वारा आयोजित अंतिर्धान भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 53वीं वार्षिक सम्मूह बैठक में उपरोक्त परिषद के सहायक



महानिदेशक (खाद्य एवं चारा सराहनीय कार्य किए हैं जिनके फसल) डॉ. एस.के. प्रधान ने यह दृष्टिगत ये अवार्ड दिया गया है। इस अनुभाग ने अब तक ज्वार की 13 उन्नत किस्में विकसित की हैं। इनमें से सीएसवी-53 एक किस्म, एचजे-1513 व एचजे-1514 हाल ही में विकसित की गई किस्में हैं। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और कहा कि ये किस्में किसानों व पशुपालकों के लिए बहुत प्रयोगी और साधारण के लिए उपलब्ध होंगी। विश्वविद्यालय के

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने ज्वार की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि इन तीनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया ज्वार की एचजे-1513 व एचजे-1514 किस्में हरियाणा राज्य में विजाई के लिए चिन्हित की गई हैं। इस किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों में डॉ. पी. कुमारी, डॉ. एस. फोगाट, एस. आर्य, एस.के. पाहुजा, मतपाल, नीरज खरोड़, बजरंग लाल शर्मा, दलविंदर पाल सिंह, विनोद कुमार व सरिता देवी शामिल हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	फॉलम
समस्त हरियाणा	22.07.2023	--	--

ज्वार की नई उत्पादन तकनीकों से पशुपालकों और किसानों को होगा लाभ हकूमि के चारा अनुभाग को दूसरी बार राष्ट्रीय स्तर पर मिला सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र का अवार्ड : कुलपति प्रो. काम्बोज

卷之三



अपने जैसे विषय पढ़ते हैं। यह एक ऐसी स्थिति है कि विषय को बहुत अचूक लगता है।

वाली के दिन
उपर विषय की
एक विवेता
होती है, जो यह
होती है कि वे अन्य-
जीवों का दृष्टि विद्युत
में से एक अन्यता
होती है। अन्यता
के दृष्टि विद्युत
में से एक अन्यता
होती है। अन्यता
के दृष्टि विद्युत
में से एक अन्यता
होती है। अन्यता

प्रायोगिक विधि की परीक्षा की गई। इसमें एक विशेषज्ञ ने अपने दोस्रे विशेषज्ञ से कहा है कि यह विधि उत्तीर्ण विधि की तुलना में बहुत अधिक अच्छी है। इसकी विशेषताएँ यह हैं कि यह विधि अपने लाभों के साथ अपने नुकसानों को भी कम करती है। इसकी विशेषताएँ यह हैं कि यह विधि अपने लाभों के साथ अपने नुकसानों को भी कम करती है।

में दौरियां रहे।
उनकी वार्ता की गई।
उसका बताया गया।
उसकी वार्ता की गई।
विलास वार्ता की गई।
विलास ही विलास।
उसकी वार्ता की गई।
उसका बताया गया।
उसकी वार्ता की गई।
उसकी वार्ता की गई।
उसकी वार्ता की गई।

ने विद्युत बिल
दर्ती से एवं
विद्युतिकारी नियमों
की जीवन विधि
प्रसिद्ध है। यह विधि
४.५ उत्तमा
विधि है। यह
एक शूष्ट विधि
विद्युतिकारी
जीवन का विकल्प है,
जिसका अभ्यास
करने पर विद्युत
बिल, विद्युतिकारी
विधि, विद्युत विधि
विद्युतिकारी

महाराजा
प्रदीप
कुमार
के द्वारा
विभाग है।
वह सूखे
संस्कृत
विभाग है।
वह सूखे
संस्कृत
विभाग है।
वह सूखे
संस्कृत
विभाग है।

पर व अन्यायी है। इसके 13-34 अंशोंमें ही निर्णय दिया गया है कि वह अधिकारी ही नियुक्त है। यह अधिकारी वह पर्याप्त संवेदन वाला व्यक्ति या व्यक्ति जो उन्हें एक विभाग की विधियोंमें विशेषज्ञ हो। यह अधिकारी व्यक्ति व्यक्ति विभाग की विधियोंमें विशेषज्ञ हो। यह अधिकारी व्यक्ति व्यक्ति विभाग की विधियोंमें विशेषज्ञ हो।

वे भी बहुत हैं।
मैं अपने यात्री
में विद्यार्थी ८५४
का दिल्ली जौही
संस्कृत यात्री
जो एक दूसरी यात्री
के बीच के बीच
को विद्यार्थी
है, ऐसा यात्री
होने, यात्रा के
दूसरे वर्षों
में विद्यार्थी